NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

पॉली हाउस में जरबेरा की उन्नति खेती एवं लाभ

[1]*रजत कुमार पाठक, [2]डॉ सौरभ सिंह, [2]नीलम कुमारी, [1]डॉ संदीप कुमार, [1]अवध नारायण, [1]सत्येन्द्र कुमार, [2]प्रवेश चौधरी

परिचय:-

दुनिया के 50 से भी अधिक देशों में संरक्षित खेती द्वारा औघानिक फसलों का व्यवसायिक उत्पादन किया जा रहा है! अमेरिका में ग्रीन हाउस के अंतर्गत लगभग 4000 हेक्टेयर क्षेत्र हैं, जिसमें मुख्य रूप से फूलों का उत्पादन किया जा रहा है, फूलों की मांग हमारे बाजारों में दिन प्रति दिन बढ़ रहा है हमारे उन्नत किसान भाई फूलों का व्यवसाय करके लाखों कमा सकते हैं! विभिन्न फसलों के वर्ष भर बेमौसम उत्पादन, स्वस्थ व रोग रहित पौधे तैयार करने हेतु मुख्यतः वातावरण अनुकूलित ग्रीन हाउस, वायु से चलित ग्रीनहाउस. कम लागत वाली पाली हाउस, शेड नेट हाउस, कीट अवरोध नेट हाउस, आदि वर्ष भर आवश्यकतानुसार उपयोग में ला सकते हैं!

उत्तर प्रदेश सरकार किसान भाइयों को पाली हाउस ग्रीन हाउस लगवाने के लिए 50 % सब्सिडी देती है, जिससे कि किसान भाई अपनी अच्छी फसल लगाकर वर्षभर अच्छी कमाई कर सकते हैं!

जरबेरा लंबी दंडी वाला व्यवसायिक फूल है, जरबेरा एस्टेरसि या कुल का सदस्य है, तथा 1 वर्षीय शाकीय पौधों के श्रेणी में आता है, जरबेरा को डेज़ी भी कहा जाता है इसके समान विभिन्न रंगो जैसे सफेद, गुलाबी, लाल, पीला, क्रीमी, नारंगी रंगों में पाया जाता है! फूलों के तने पतले तथा पत्तियां रहित होते हैं, जिसमें फूल एक हरे, दोहरे तथा आधे दोहरे प्रकार के पंखुड़ियों की लाइनों के आधार पर होते हैं! व्यवसायिक पुष्प की खेती सभी प्रकार की जलवायु में सफलतापूर्वक की जा सकती है, जरबेरा की गुलदान आयु काफी होती है इस कारण यह पुष्प विश्व के 10 फूलों में गिना जाता है!

जरबेरा के उत्तम गुण के फूल उत्पादन के लिए दिन का तापमान 22-25 डिग्री सेल्सियस तथा रात का औसत तापमान 12-16 डिग्री सेल्सियस उत्तम है! वैसे तो जरबेरा की खेती खुले में भी की जाती है परंतु अर्धछायाकार स्थान अधिक उपयुक्त रहते हैं छाया करने के लिए 50 प्रतिशत छाया का नेट का प्रयोग

[1]*रजत कुमार पाठक (सहायक अध्यापक), [2]डॉ सौरभ सिंह (सहायक अध्यापक)
[2]नीलम कुमारी (एम. एस. सी.- उद्यान विज्ञान), [1]डॉ संदीप कुमार (सहायक अध्यापक)
[1]अवध नारायण (सहायक अध्यापक), [1]सत्येन्द्र कुमार (सहायक अध्यापक)
[2]प्रवेश चौधरी (एम. एस. सी.- उद्यान विज्ञान)
कृषि संकाय
[1]सहायक अध्यापक, बुद्ध महाविद्यालय, रतसिया कोठी, देवरिया
[2]दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

किया जाता है, नई किस्म, विदेशों से आयातित किस्मों, संकर किस्मों की खेती खुले में करने से उत्पादन एवं गुणवत्ता में कमी आ जाती है, जिससे किसानों को अच्छी आमदनी नहीं प्राप्त हो पाती है, ग्रीन हाउस, गुणवत्ता युक्त एवं अधिक पुष्प उत्पादन के लिए बहुत ही उपयोगी है!

पाली हाउस में लगे ऊपरी नेट को बादल छाया होने के दौरान खुला रखना चाहिए, अन्यथा करीब 8:00 बजे बंद कर देना चाहिए एवं 4:00 बजे संध्या में खोल देना चाहिए नेट को ठंडी रातों के दौरान बंद करना चाहिए एवं गर्म रातों के द्वारा खुला रखना चाहिए! तापमान एवं आर्द्रता नियंत्रण के लिए पाली हाउस में

जरबेरा पुष्प उत्पादन हेतु नेचुरल वेंटिलेटेड पाली हाउस जो कि अपेक्षाकृत कम लागत में बनाए जाते हैं ताकि उत्तम पुष्प उत्पादन किया जा सके! पाली हाउस की ऊंचाई 6 मीटर एवं लंबाई के अनुसार रखी जाती है, उत्तर दक्षिण रखी जाती है प्रभाव कम होता है! पाली हाउस में लगी पॉलीथिन की मोटाई 200 माइक्रोन होती है, गठन की दिशा उत्तर दक्षिण रखी जाती है जिससे बारिश का पानी आसानी से निकल जाता है!

पाली हाउस में तापमान और आर्द्रता नियंत्रण:-

फॉगर प्रणाली लगाई जाती है, इसके द्वारा पानी की अति सूक्ष्म बूंदे निकलती है जिससे सिंचाई के साथ-साथ तापमान में कमी आती है और आर्द्रता बढ़ जाती है, इससे पानी की बचत के साथ-साथ तापमान और आर्द्रता नियंत्रित रहती है!

मृदा उपचार:-

भूमि की तैयारी के पूर्व मिट्टी को जीवाणु रहित करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है, अन्यथा मिट्टी जनित रोगाणु पिथियम, फ्यूजेरियम, तथा फाइटोप्थोरा आदि पॉलीहाउस के अंदर की फसल को बहुत हानि पहुंचाते

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

हैं मिट्टी को जीवाणु रहित करने के लिए फार्मल्डिहाइड (100 मिलीलीटर फॉर्मलीन प्रति 5 लीटर पानी प्रति वर्ग मीटर क्षेत्र) या मिथाइल ब्रोमाइड 20-30 ग्राम प्रति वर्ग मीटर से उपचार करना चाहिए, इसके बाद मिट्टी को 2 सप्ताह के लिए पॉलिथीन से ढक के रख देना चाहिए!

भूमि की तैयारी:-

भूमि की बुनाई करके मिट्टी को बरबरी बनाना चाहिए, जमीन 36 सेंटीमीटर उठी हुई 2 मीटर की चौड़ी क्यारियां बनाकर कंपोस्ट, मोटी रेता तथा चावल की भूसी 2:1:1 के अनुपात में मिलाकर क्यारी में डालना चाहिए, इसके अलावा 6 किलोग्राम नाइट्रोजन, 4 किलो ग्राम फॉस्फोरस, एवं 6 किलोग्राम पोटाश 1000 मीटर के हिसाब से मिट्टी में मिला देना चाहिए, यह सारी खादे व उर्वरक खेल की तैयारी के समय मिलाना चाहिए!

जरबेरा की किस्मों का चयन:-

जरबेरा की उन्नति खेती के लिए निम्न किस्मों के चयन करें- रोसलिन, साल्वाडोर, डायना एलन, सिल्वेस्टर, सनवे, चिगंरी किस्मे पाली हाउस में अच्छा उत्पादन देती हैं!

खाद व उर्वरक:-

जरबेरा फूल उत्पादन के लिए खाद एवं उर्वरकों की विशेष आवश्यकता पड़ती है, गोबर की खाद 7.5 kg, NPK की मात्रा 10:15:20 ग्राम प्रति वर्ग मीटर प्रति माह (रोपाई से 4 महीने बाद फूल आने तक) डालनी चाहिए, यह मात्रा महीने में दो बार देनी चाहिए इसके अलावा बोरान, मैगनीशियम तथा कॉपर का 0.5% घोल (1.5 मिली लीटर पानी) बनाकर छिड़काव करना चाहिए!

रोपाई:-

जून से अगस्त माह में जमीन से ऊँची क्यारियों में पौधों की रोपाई करनी चाहिए रोपाई के समय 30 से 40 सेंटीमीटर पंक्ति से पंक्ति का फासला तथा पौध से पौध में 25 से 30 सेंटीमीटर का फासला रखा जाना चाहिए, इस प्रकार 6:00 से 7:00 प्रति वर्ग मीटर घनत्व बन जाता है!

सिंचाई:-

रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करनी अनिवार्य होती है, जरबेरा फसल की पानी की आवश्यकता 500-700 मिली लीटर प्रति दिन प्रति पौधा (5-6 लीटर प्रति वर्ग मीटर) होती है, ड्रिप सिंचाई विधि से पौधों की पानी तथा उर्वरकों की पूर्ति की जा सकती है!

फूलों की तूड़ाई व तूड़ाई उपरांत देखभाल :-

पौध रोपाई के लगभग 3 माह बाद फूल खिलने प्रारंभ हो जाते हैं, ग्रीन हाउस में 200 फूल प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष उत्पादित होते हैं, फूलों के तोड़ने का सही अवस्था जब डिस्क फ्लोरेट की 2-3 पत्तियां फूल तने के साथ समकोण बनाती हैं, फूलों को जड़ से 2-3 सेंटीमीटर से काटकर कट भाग को ताजा पानी में

डुबोकर रखना चाहिए, तत्पश्चात 12 फूलों का बंडल बनाकर अखबार में लपेट कर पैकिग की जाती है, दूरस्थ बाजारों में भेजना हो तो फूलों के भाग पर गीली रुई लगाकर पॉलिथीन से बांधकर पैकिग करते हैं ताकि यात्रा के समय फूलों को लगातार पानी मिलता रहे!